पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज

स्वच्छता - स्वास्थ्य का आधार।

आज के समय में सबसे अधिक प्रासंगिक विषयों में एक है 'पारिस्थितिक स्वच्छता'। समाज पर स्वच्छता का प्रभाव महत्वपूर्ण है। पारिस्थितिक स्वच्छता का महत्व क्या है? क्या आज पारिस्थिति स्वच्छ नहीं है? स्वच्छता पर चर्चा करना इस समय की माँग है।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि, "स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत है"। स्वच्छता की दो पहलू हैं। व्यक्ति की स्वच्छता और पारिस्थितिक स्वच्छता। आज हर व्यक्ति खुदके स्वच्छता के बारे में सोचते हैं लेकिन वे पारिस्थितिक स्वच्छता को नज़र-अंदाज़ करते हैं। मानव जाति समय के साथ बहुत प्रगति हासिल किए हैं। लेकिन हमारे चारों ओर देखने पर पता चलता है कि स्वच्छता में हम पीछे होते जा रहे हैं। नवाचार और विकास पर ध्यान देनेवाले इनसान आज पारिस्थिति को कूड़ेदान समझने लगा है।

स्वच्छता में आए नष्टकचरा - क्या कारण है ?

हम जानते हैं कि यह बदलाव का युग है। पुराने ज़माने में इनसान प्रकृति से प्यार करते थे और उसके साथ मिल-झुलकर जीते थे। उस वक्त वे अपने कूड़े-कचरें का क्या करते थे ? हम समझने की बात है कि उस वक्त प्लास्टिक जैसे चीज़ नहीं थे। अगर कचरे फैंका जाए तो भी वे मिट्टी के साथ मिल जाते थे। प्लास्टिक अ चीज़ों का एक उदाहरण है जिससे मिट्टी प्रदूषित होती है। सोचके देखिए कि अगर हर व्यक्ति अपने घर की कूड़े-कचरे प्रकृति में फैंकना शुरू किया तो इस धरती का क्या हालत बनेगा। सड़क के किनारे कूड़ेदान दिखने पर भी लोग कूड़े इधर-उधर फैंकते है। हमें मालूम है कि इसका परिणाम क्या है। लेकिन फिर भी .. हम करते हैं।

आज जल-प्रदूषण तेज़ी से बढ़ते जा रहे है। कूड़े-कचरों को जलस्रोतों में फैंकने से पानी प्रदूषित हो रही है। कारखानों और घरों से आ रहे है गंदा पानी जलस्रोतों में मिल रहे है और उनको बर्बाद कर रहे हैं।

आज खेतों में कीटनाशकों और रसायनों का उपयोग बहुत ज़्यादा है। इस कारण से मिट्टी और पानी प्रदूषित हो रही है। अगली एक बड़ी समस्या है वायु-प्रदूषण। गाड़ियों की संख्या बहुत ज्यादा हो रही है और नए-नए कारखाने बन रहे हैं। यह वायु-प्रदूषण का मुख्य कारण है। प्लास्टिक और अन्य वस्तुओं को जलाने पर निकलने वाला धुआँ अंतरीक्ष को गंदी कर रही है। दुनिया में आज शहरीकरण बढ़ रहा है और इसके साथ पारिस्थितिक स्वच्छता पर क्षति पहुँच रही है।

पारिस्थितिक स्वच्छता के अभाव का परिणाम क्या है? इसका प्रभाव किसी एक व्यक्ति पर नहीं पूरे समाज पर होता है। कूड़े-कचरों को बाहर फेंकने से एक दिन समाज एक कूड़ेदान बन जाएगा। गंदगी और बदबू के कारण इस दुनिया में जीना मुश्किल बन जाएँगा। इससे प्रकृति का नाशन होगा और अन्य प्राणियों का जीना मुश्किल बन जाएगा। पर्यावरण कचरे से भर गया तो पेड़-पौधे और जीव-जंतुओं की मृत्यु हो जाएगी। मिट्टि प्रदूषित होने पर पर्यावरण

का नाश्न होगा। अगर पानी मिट्टी के अंदर घुस नहीं पाया तो इसका परिणाम बहुत भयानक होगा।

बढ़ती जल-प्रदूषण के कारण पानी में जी रहे जंतुओं की मृत्यु हो रही है। प्रदूषित पानी पीने लायक नहीं बचता। इससे यह होता है कि पानी के अभाव से पृथ्वी का नाशन हो जाएगा। वायु-प्रदूषण के कारण जीव-जंतु मर रहे हैं और लोगों को कई बीमारियाँ आ रही है। साँस लेना मुश्किल हो जाता है। पर्यावरण प्रदूषण सभी जीवियों के लिए खतरा है। पारिस्थितिक स्वच्छता का इनसान और समाज से संबंध चर्चा करने वाला विषय है। स्वच्छता और स्वास्थ्य एक दूसरे के पूरक है। अगर हमें स्वस्थ रहना है तो, स्वच्छ रहना है। व्यक्ति की स्वच्छता के साथ सामाजिक और पारिस्थितिक स्वच्छता पर सोचना और इस समस्या का उपाय ढूँढना हम सभी का दायित्व है। पारिस्थितिक स्वच्छता का अभाव, आज समाज में बढ़ती बीमारियों का मुख्य कारण है। प्रदूषण के कारण क्यानसर जैसे बीमारियों की संभावना बढ़ रही है।

"स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है", यह कथन हम जानते हैं। लेकिन आज हमारे चारों-ओर देखने पर लगता है कि इनसान इस बात को भूल गया है। क्योंकि स्वच्छता के बिना स्वस्थ जीवन संभव नहीं है। इनसान एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए हमें खुद के साथ-साथ समाज की स्वच्छता के बारे में भी सोचना चाहिए। एक स्वच्छ समाज ही स्वस्थ होता है, और एक स्वस्थ समाज ही प्रगति हासिल कर सकता है। स्वच्छता, स्वास्थ्य और प्रगति का गहरी आपसी संबंध है। जैसे हम नवाचार के लिए प्रयास करते हैं, उसी तरह पारिस्थितिक स्वच्छता के लिए भी प्रयास करना ज़रूरी है। नहीं तो यह समाज की अस्थित्व के लिए खतरा है।

इस समस्या का उपाय क्या है? उपाय हमारे सामने ही है। लेकिन हम देख नहीं रहे। अगर हर व्यक्ति कूड़े-कचरे की सही निस्तारण करे तो हम परिस्थिति को स्वच्छ बना सकते हैं। हमें मालूम है कि पारिस्थितिक स्वच्छता कितना महत्वपूर्ण है। अगर हमने पहले ही उसका पालन किया होता तो

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 948 Participant Code: 334

आज इस विषय पर चर्चा नहीं करना पड़ता । जो होना था वह हो गया । अगला चरण इसका उपाय केलिए प्रयास करना है । हमें अपनी कूड़े-कचरे का सही निस्तारण करना चाहिए । कूड़े को कूड़ेदान में ही डालना चाहिए । स्वच्छता को कायम रखने हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए । अलग-अलग तरह की कूड़े को अलग करके ही उसका निस्तारण करना है । उदाहरण केलिए, प्लास्टिक, कागज़ और पत्तों की निस्तारण एक तरह से नहीं होता है । हमें हर संभव वस्तुओं का पुनर्चक्रण करना चाहिए । पुनर्चक्रण स्वच्छता कायम रखने केलिए अच्छा मार्ग है । हमें इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि कोई व्यक्ति गलती से भी कूड़े को प्रकृति में न फैंके । हमें प्रदूषण का अंत करना है । वाहनों और कारखानों के उपयोग हम रोक नहीं सकते, लेकिन कम ज़रूर कर सकते हैं । रसायन और कीटनाशकों का इस्तेमाल कम करना है । सूरज, हवा आदि से मिलने वाले ऊर्जा का इस्तेमाल करने से प्रदूषण खतम कर सकते है ।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज का संबंध हम जान चुके हैं। रोज़ दांत साफ़ करने और नहाने को कोई नहीं भूलता। इसी प्रकार हम सबको पारिस्थितिक स्वच्छता का पालन करना चाहिए। प्रौद्योगिकी में हुई वृद्धी का इस्तेमाल हम यहाँ भी कर सकते। आज कचरे की निस्तारण केलिए नए और आसान रास्ते हैं। हमें उनका उपयोग करना चाहिए। समाज को जागरूक करना भी अवश्य है। स्वच्छता का महत्व हर व्यक्ति को समझना चाहिए। इसमें युवा पीढ़ी का बड़ा योगदान है। भारत सरकार की 'स्वच्छ भारत अभियान' जैसी गतिविधियाँ इसमें हमारी मदद करेंगे। स्वास्थ्य जीवन की रीढ़ है। पारिस्थितिक स्वच्छता का पालन करते हुए हम एक स्वस्थ समाज की नींव रख सकते हैं। समाज को प्रगति के ऊँचाईओं पर पहुँचाने केलिए हम सबको हर संभव प्रयास करना है। हरेक को मिसाल बनकर आगे आना है। व्यक्ति से शुरू करके पूरे समाज में स्वच्छता की रोशनी फैलानी है। चलो, हमारे राष्ट्र भारत को दुनिया के सामने मिसाल बनाते हैं।

हम हमेशा बदलाव के बारे में सोचते हैं। लेकिन सिर्फ सोचने से कुछ नहीं होगा। इसकेलिए हमें एक साथ कदम आगे बढ़ाना होगा। एक साथ मिलकर हम स्वच्छता का पालन कर सकते हैं और एक स्वस्थ और विकसित समाज की नींव रख सकते हैं।

"अगर आप इस दुनिया में कोई बदलाव देखना चाहते हैं, तो उसकी शुरुआत आपसे ही होना चाहिए।" – महात्मा गाँधी